बच्चों! आओ

क़ुरआन

से सीखें

क़ुरआन की कुछ आयतें तर्जुमे और पैग़ाम के साथ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुछ बातें बच्चों से

प्यारे बच्चों! तुम स्कूल से लौटने के बाद वहाँ की पढ़ाई और बहुत सारा होम वर्क करने के बाद क्या करना पसन्द करते हो? तुम्हारा दिल तो चाहता होगा कि तुम उस वक़्त सिर्फ़ खेलो या फिर अच्छी और मज़ेदार कहानियाँ पढ़कर अपना दिल बहलाओ।

तो इसी बात को सामने रखकर हमने तुम्हारे लिये बहुत दिलचस्प गेम्स और ख़ूबसूरत रंगीन कहानियों की किताबें तैयार की हैं। इन गेम्स को खेलने और किताबों को पढ़ने से तुम्हारा वक़्त बर्बाद नहीं होगा। उल्टे तुम्हें बहुत सी अच्छी–अच्छी बातें जानने को मिलेंगी। जिनसे तुम आगे चलकर एक कामयाब इन्सान बन सकोगे।

तो फिर देर किस बात की है, अपने घर के बड़ों से कहो कि वो हमसे फ़ोन, ई–मेल या ख़त के ज़रिये राब्ता करें और हमसे तरह–तरह के गेम्स और किताबें मँगवाएं। इन चीज़ों को तुम अपनी बर्थडे के मौक़े पर अपने दोस्तों को तोहफ़े में भी दे सकते हो।

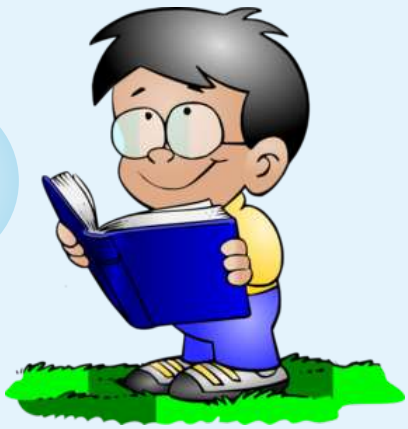

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

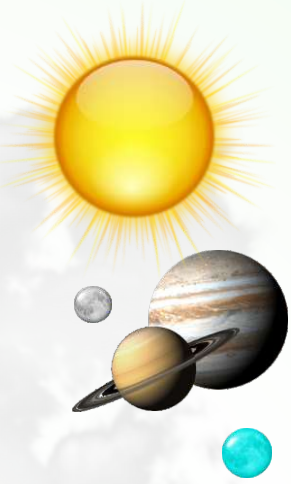

चलो बच्चों कुछ बातें करें

प्यारे बच्चों ! तुम को मालूम होगा कि हम सबको अल्लाह ने पैदा किया है। वह हमसे बहुत प्यार करता है। इतना प्यार करता है कि उसने यह आसमान, यह सूरज, यह चाँद, यह सितारे, यह ज़मीन, यह पेड़–पौधे, यह चरिन्द–परिन्द सब कुछ हमारे लिये बनाये हैं। यह सब हमारे लिये अल्लाह के तोहफ़े हैं। लेकिन अल्लाह ने हमें एक तोहफ़ा ऐसा भी दिया है जो इन सब से बड़ा है। और वह है क़ुरआन। क़ुरआन अल्लाह की किताब है जिसे उसने अपने आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (स) के साथ हमारे पास भेजा है। दरअस्ल क़ुरआन के ज़रिये अल्लाह हम से बातें करता है। हमें अच्छी–अच्छी बातें बताता है। अगर हम इन बातों को पढ़ें, समझें और इनके मुताबिक़ अमल करें तो हमारी ज़िन्दगी सँवर जाएगी और हम सब से अच्छे कहलाएँगे।

इस किताब में कि जो इस वक़्त तुम्हारे हाथ में है, कुरआन की बताई हुई कुछ बातें लिखी हैं। हर इतवार को या जब भी स्कूल की छुट्टी हो इस किताब से अल्लाह की बताई हुई कोई एक बात पढ़ो, उसे याद करो, उसके मतलब को समझो और फिर सोचो कि इस पर कैसे अमल किया जाये। जब तुम इन बातों पर अमल करने लगोगे तो तुम एक नेक इन्सान भी बनोगे, तुम्हें ज़िन्दगी में कामयाबी भी मिलेगी और तुमसे अल्लाह भी खुश होगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है

(सूरए हम्द : 1)

बच्चों! याद रखो कि:

अल्लाह बहुत मेहरबान है इस लिये जब कोई काम शुरू करो तो "बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम" ज़रूर कह लिया करो। ऐसा करने से उस काम को पूरा करने में अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें कामयाबी मिलेगी।

कुरआन में लिखा है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

हर तारीफ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम कायनात का रब है

(सूरए हम्द : 2)

बच्चों! याद रखो कि:

- अल्लाह हम सबका रब है यानी पालने वाला है। वह हमेशा हमारा ख़्याल रखता है। जिस चीज़ की भी ज़रूरत हमें होती है वह हमें देता है। कितनी चीज़ें ऐसी हैं जो उसने हमें बग़ैर माँगे दी हैं।

- क्या तुम ने कभी रात में आसमान की तरफ़ देखा है? अनगिनत नन्हें–नन्हें टिमटिमाते तारे दिखाई दिये होंगे। यह अस्ल में इतने छोटे नहीं हैं जितने छोटे दिखाई देते हैं। यह सब हमारी दुनिया से भी कई गुना बड़ी दुनियाएँ हैं और हमारे सूरज से भी बड़े सूरज हैं। अल्लाह इन सबको चलाने वाला है।

- हमें हमेशा अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिये और जब कोई नेमत मिले तो "अलहम्दु लिल्लाह" कहना चाहिये।

कुरआन में लिखा है:

وَاللّٰهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ

वल्लाहु बसीरुम बिमा तअमलून

और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है

(सूरए हुजरात : 18)

बच्चों! याद रखो कि:

- हम चाहे कोई काम छिपा कर करें या दिखा कर करें, अल्लाह सब देखता है। हम उससे कोई भी चीज़ छिपा नहीं सकते।

- अगर हम अच्छे काम करें और कोई हमारे काम की तारीफ़ न करे, शाबाशी न दे तो मायूस नहीं होना चाहिये क्योंकि अल्लाह देख रहा है और वह इनाम देगा।

- हमें कभी भी कोई बुरा काम नहीं करना चाहिये चाहे कोई इन्सान देख रहा हो या न देख रहा हो। हो सकता है हम कोई बुरा काम माँ–बाप या टीचर की नज़र से बच के करें और डाँट से बच जायें लेकिन अल्लाह की नज़र से नहीं बच सकते।

कुरआन में लिखा है:

وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ

व हुवा मअकुम ऐना मा कुन्तुम

और तुम जहाँ कहीं रहो वह (अल्लाह) तुम्हारे साथ है

(सूरए हदीद : 4)

बच्चों! याद रखो कि:

- कभी–कभी इन्सान मुश्किलों में घिर जाता है और कोई मदद करने वाला दिखाई नहीं देता। लेकिन ऐसे में उसे घबराना नहीं चाहिये। बल्कि यह यक़ीन रखना चाहिये कि अल्लाह उसके साथ है और वह उसकी मदद करेगा।

- माँ–बाप, भाई–बहन, रिश्तेदार, दोस्त या साथी कोई भी हमेशा हमारे साथ नहीं रह सकता लेकिन अल्लाह हमेशा हमारे साथ है। इसलिये हमें हमेशा उस पर भरोसा रखना चाहिये। और कभी भी उसकी नाफ़रमानी नहीं करनी चाहिये।

कुरआन में लिखा है:

اِنِّیۡۤ اَخَافُ اللّٰہَ رَبَّ الۡعٰلَمِیۡنَ

इन्नी अख़ाफ़ुल्लाहा रब्बल आ—ल—मीन

मैं तो उस अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहानों का पालने वाला है

(सूरए माएदा : 28)

बच्चों! याद रखो कि:

- जो आदमी अल्लाह से डरता है वह कभी बुराई नहीं करता और वह एक नेक इन्सान बन जाता है।
- जो अल्लाह से डरता है वह फिर किसी और से नहीं डरता और वह एक बहादुर इन्सान बन जाता है। लेकिन जो अल्लाह से नहीं डरता वह हर चीज़ से डरने लगता है।
- अगर कोई तुम से किसी बुरे काम को करने के लिये कहे तो कभी उसकी बात न मानो और कहो कि मैं तो उस अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहानों का पालने वाला है।

क़ुरआन में अल्लाह ने कहा है:

اَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ

अ–फ़–ला त–त–फ़क्करून

आख़िर तुम लोग क्यों नहीं सोचते ?

(सूरए अनआम : 50)

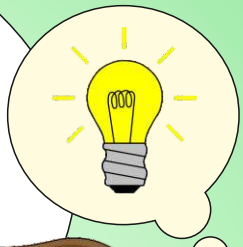

बच्चों! याद रखो कि:

- अल्लाह ने हमें अक़्ल दी है, सोचने समझने की सलाहियत दी है। इसी लिये अल्लाह चाहता है कि हम अपनी अक़्ल इस्तेमाल करें और सोच–विचार कर के कोई काम करें।

- जो इन्सान बे सोचे समझे बोलता है और बे सोचे समझे कोई काम करता है वह बाद में पछताता है।

- हमको अल्लाह के बारे में, उसकी बनाई हुई चीज़ों के बारे में, ज़मीन और आसमान के बारे में, क़ुरआन की आयतों के बारे में सोचना चाहिये। हमें ख़ुद अपने बारे में भी सोचना चाहिये कि हम दुनिया में क्यों आये? हमें कहाँ जाना है? वो कौन सी सलाहियतें हैं जो अल्लाह ने हमें दी हैं? क्या हम उन सलाहियतों का सही इस्तेमाल कर रहे हैं? और हम अपने वक़्त का सही इस्तेमाल कैसे करें? वग़ैरा वग़ैरा। हमें भेंड़–बकरी की तरह नहीं जीना है बल्कि इन्सान की तरह सोच–समझ के जीना है।

क़ुरआन में अल्लाह ने कहा है:

وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ

वशकुरूली वला तकफ़ुरून

मेरा शुक्रिया अदा करो और नाशुक्री न करो

(सूरए बक़रह : 152)

बच्चों! याद रखो कि:

- अगर तुम्हारा दोस्त तुम्हें कोई तोहफ़ा दे तो नेक इन्सान होने के नाते तुम्हें उसका शुक्रिया अदा करना चाहिये। अब अगर तुम अपने दोस्त के दिये हुये तोहफ़े को उसके सामने ख़राब करोगे तो यह उसकी नाशुक्री होगी। ऐसा करने से तुम्हारे दोस्त को बुरा लगेगा। और हो सकता है कि वह फिर कभी तुम्हें कोई तोहफ़ा न दे।

- अल्लाह ने जितनी नेमतें हमें दीं हैं हम अगर उन्हें गिनना चाहें तब भी गिन नहीं सकते। क्या इन्सानियत यह नहीं कहती है कि जो हमारे ऊपर इतना मेहरबान हो हम उसका शुक्रिया अदा करें। अगर हम उसकी दी हुई नेमतों का ग़लत इस्तेमाल करेंगे या उन्हें बरबाद करेंगे तो यह अल्लाह की नाशुक्री होगी। ऐसा करने से अल्लाह नाराज़ होगा। और हो सकता है कि वह फिर कभी हमें ऐसी नेमतें न दे।

- इसलिये हम को हमेशा अल्लाह का शुक्र अदा करते रहना चाहिये, उसका हर हुक्म मानना चाहिये और उन चीज़ों से बचना चाहिये जिनसे उसने रोका है।

कुरआन में लिखा है:

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا

व बिल वालिदैनि इहसाना

और माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करना

(सूरए बक़रह : 83)

बच्चों! याद रखो कि:

- माँ–बाप का हम पर बड़ा एहसान होता है। वो पैदाइश के वक़्त से ही हमारे साथ होते हैं और हमारी देख–रेख करते हैं। इसी लिये अल्लाह ने कुरआन में जगह–जगह उनके साथ नेकी और भलाई का हुक्म दिया है।
- हमारे माँ–बाप ने उस वक़्त हमारी देख भाल की और हमारी तमाम ज़रूरतें पूरी कीं जब हम ख़ुद से कोई काम भी नहीं कर सकते थे यहाँ तक कि यह भी नहीं कह सकते थे कि हमें प्यास लगी है। हमारे माँ–बाप ने ख़ुद तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं लेकिन हमें कोई तकलीफ़ होने नहीं दी।
- इसलिये अल्लाह का हुक्म है कि हम अपने माँ–बाप से अच्छा सुलूक करें। और वो इस तरह कि हम उनका कहना मानें, उनका अदब व एहतेराम करें, उनसे नर्म लहजे में बात करें और अगर वो डाँटें तो हम ख़ामोश रहें और उनका जवाब न दें।
- अगर हमने अपने माँ–बाप को तकलीफ़ पहुँचाई तो अल्लाह हम से नाराज़ होगा।

कुरआन में लिखा है:

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

इन्नल्लाहा मअस्साबिरीन

बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है

(सूरए बक़रह : 153)

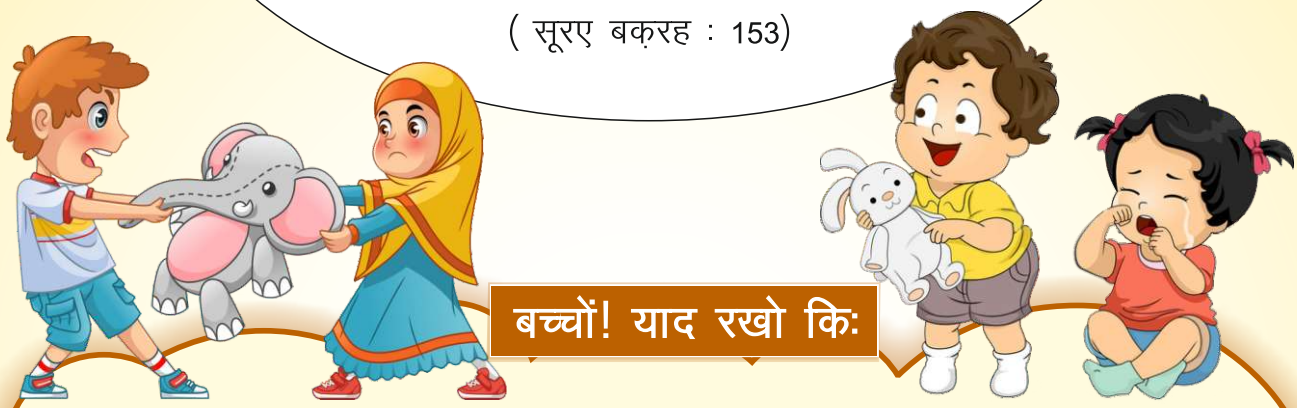

बच्चों! याद रखो कि:

- अगर हम अपने क्लास में या अपने दोस्तों में किसी बच्चे के पास कोई ऐसी चीज़ देखें जो हमारे पास न हो या हमारे माँ–बाप उसे न ख़रीद सकते हों तो हमें सब्र करना चाहिये क्योंकि अल्लाह सब्र करने वालों को पसन्द करता है।

- अगर हमें बाज़ार में कोई ऐसी चीज़ दिखाई दे जिसे ख़रीदने का दिल चाह रहा हो लेकिन माँ–बाप मना कर रहे हों तो फिर हमें ज़िद नहीं करनी चाहिये। ––– हमें सब्र करना चाहिये।

- हमको अपने दोस्तों से या भाई–बहन से लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिये। अगर उनकी ग़लती हो तब भी हमें उन्हें प्यार से समझाना चाहिये। और अगर प्यार से भी न समझ रहे हों तो बात वहीं ख़त्म कर देनी चाहिये लेकिन लड़ाई नहीं करना चाहिये। ––– हमें सब्र करना चाहिये।

कुरआन में लिखा है:

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّا اُولُوا الْاَلْبَابِ

व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल अलबाब

और नसीहत तो वही लोग मानते हैं जो अक़्लमन्द होते हैं

(सूरए बक़रह : 269)

बच्चों! याद रखो कि:

- कभी तो क़ुरआन हमें नसीहत करता है यानी वह हमें बताता है कि हमारे लिये क्या अच्छा है और क्या बुरा है। और कभी रसूल और इमाम हमें नसीहत करते हैं। कभी हमारे माँ–बाप तो कभी हमारे टीचर, कभी बड़े भाई–बहन तो कभी ख़ानदान के बुज़ुर्ग लोग। कभी दोस्त भी नसीहत करते हैं और कभी–कभी तो छोटे भाई–बहन भी अच्छी नसीहतें करते हैं।

- अलबत्ता बहुत से लोग बुरा मान जाते हैं और नसीहत करने वाले से नाराज़ हो जाते हैं। लेकिन जो लोग अक़्लमन्द होते हैं वो कभी किसी की नसीहत का बुरा नहीं मानते। बल्कि नसीहतों से फ़ाएदा उठाते हैं और अपने आप को नुक़सान से बचाते हैं।

कुरआन में लिखा है:

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِندِ اللّٰهِ

व मन नसरु इल्ला मिन इनदिल्लाह

और मदद अल्लाह के सिवा कहीं से नहीं होती

(सूरए अनफ़ाल : 10)

बच्चों! याद रखो कि:

- बहुत से लोग मुश्किलों में अल्लाह को भूल जाते हैं और दूसरों से मदद माँगने लगते हैं। मगर हमको जंगे बद्र से सीख लेनी चाहिये कि अल्लाह पर भरोसा करने वाले कैसे कामयाब होते हैं। जंगे बद्र इस्लाम की पहली जंग थी। इस जंग में दुश्मन के 1000 सिपाही हज़रत मुहम्मद(स) और उनके साथियों से लड़ने के लिये पहुँच गये। जबकि दूसरी तरफ़ हज़रत मुहम्मद (स) के पास सिर्फ़ 313 लोग थे। उनके पास जंगी साज़ो सामान भी बहुत कम था। मसलन सिर्फ़ 2 घोड़े थे और 13 तलवारें थीं। लेकिन हज़रत मुहम्मद (स) और उनके साथी घबराए नहीं। उन्होंने अल्लाह पर भरोसा करते हुए दुश्मन का डट कर मुक़ाबला किया। नतीजतन अल्लाह ने भी फ़रिश्ते भेजकर उनकी मदद की। आख़िर में मुसलमानों की जीत हुई।
- इससे पता चलता है कि अगर हम अल्लाह पर भरोसा करेंगे तो वो हर मुश्किल में हमारी मदद करेगा।

कुरआन में लिखा है:

وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ

व ला तनाबज़ू बिल अलक़ाब

और एक दूसरे को बुरे नामों से न पुकारो

(सूरए हुजरात : 11)

बच्चों! याद रखो कि:

- हमें किसी का नाम नहीं बिगाड़ना चाहिये क्योंकि यह बात अल्लाह को हरगिज़ पसन्द नहीं।
- बच्चों! तुमने बहुत से लोगों को देखा होगा कि वो दूसरों का मज़ाक़ उड़ाने के लिये उन्हें ख़राब नाम से पुकारते हैं। जैसे "बुद्धू", "मोटू", "कल्लू" वग़ैरा वग़ैरा। यह गुनाह है। अल्लाह को बिल्कुल पसन्द नहीं है कि किसी का इस तरह से मज़ाक़ उड़ाया जाये। हमें हमेशा दूसरों की इज़्ज़त करनी चाहिये और उन्हें अच्छे अंदाज़ से पुकारना चाहिये।

कुरआन में लिखा है:

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا

व ला यग़्तब बअज़ुकुम बअज़ा

और कोई किसी की ग़ीबत न करे

(सूरए हुजरात : 12)

बच्चों! याद रखो कि:

- अगर कोई इन्सान सामने मौजूद न हो और हम उसकी बुराई करें या उसका मज़ाक़ उड़ायें या उसके बारे में ऐसी बात करें जो उसे बुरी लगती हो तो इस तरह की बातों को ग़ीबत कहते हैं।

- ग़ीबत करना बहुत बड़ा गुनाह है। ग़ीबत करने वालों से अल्लाह बहुत नाराज़ होता है। कुरआन में लिखा है कि ग़ीबत करना अपने मरे हुए भाई के गोश्त खाने जैसा है।

कुरआन में लिखा है:

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

इन्नल्लाहा युहिब्बुल मुहसिनीन

यक़ीनन अल्लाह अच्छे काम करने वालों से मुहब्बत करता है

(सूरए बक़रह : 195)

बच्चों! याद रखो कि:

- अल्लाह उस इन्सान से खुश होता है जो नेक काम करता है। मिसाल के तौर पर वो जो अल्लाह का हुक्म मानता है, माँ–बाप की इज़्ज़त करता है, ग़रीबों की मदद करता है, इल्म हासिल करता है वग़ैरा वग़ैरा।

- नेक काम करने वाला नेक काम से भी बेहतर होता है। और बुरे काम करने वाला बुराई से भी बदतर होता है।

कुरआन में लिखा है:

فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

फ़सअलू अहलज़्ज़िक्रि इनकुन्तुम ला तअलमून

अगर तुम नहीं जानते तो जानने वालों से पूछो

(सूरए नह्ल : 43)

बच्चों! याद रखो कि:

- कोई ऐसी बात जो हमें मालूम न हो उसे पूछने में हमें ज़रा भी शर्माना नहीं चाहिये। मगर सिर्फ़ उस इन्सान से पूछनी चाहिये जो उसे जानता
- मसलन अगर क्लास में कोई बात न समझ में आये तो टीचर से पूछना चाहिय। अगर हम बीमार पड़ें तो बे समझे–बूझे खुद से दवा नहीं खानी चाहिये बल्कि डाक्टर से पूछना चाहिये। अगर मकान बनाएँ तो इन्जीनियर से पूछना चाहिये। इसी तरह से अगर दीन का कोई मसअला हो तो आलिमे दीन से पूछना चाहिये।

कुछ बातें बड़ों से

याद रखिये कि बचपन का दौर वो होता है जिसमें बच्चों की तालीम व तरबियत पर ध्यान देने की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है। दूसरी तरफ़, आपने देखा होगा कि इस ज़माने में बच्चों की लगभग सभी स्कूली किताबें रंगीन और ख़ूबसूरत हैं। इन्हीं दो बातों को सामने रखकर हमने आपके बच्चों के लिये ऐसी किताबें और गेम्स तैयार किये हैं जो रंगीन होने के साथ–साथ बेहद दिलकश और दिलनशीन हैं। इन चीज़ों के ज़रिये बच्चे खेल ही खेल में दीनी बातें सीख सकते हैं। आपसे गुज़ारिश है कि बस आप ऐसे मौक़ों को तलाश कीजिये जिन पर ये किताबें और गेम्स बच्चों के बीच तक़्सीम की जा सकें। आपकी मदद के लिये हम कुछ मौक़ों का ज़िक्र यहाँ कर रहे हैं:

1. किसी के घर जाएँ तो उनके बच्चों के लिये तोहफ़े के तौर पर ले जाएँ।
2. किसी बच्चे की साल गिरह के मौक़े पर उसे तोहफ़े में दें।
3. ईदे ग़दीर, मासूमीन(अ.) की विलादत के मौकों पर और महफ़िलों में तक़्सीम करें।
4. मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।
5. बच्चों के प्रोग्राम और दीनी क्लासेज़ में इनाम के तौर पर दें।

हमारी पब्लिकेशन्स

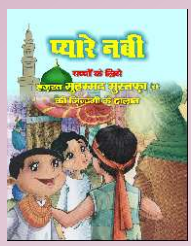

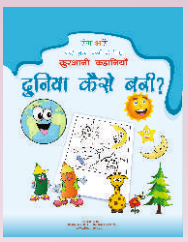

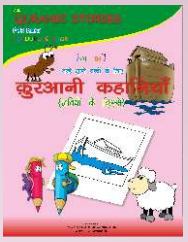

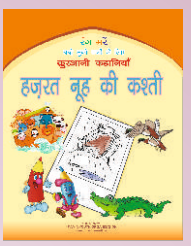

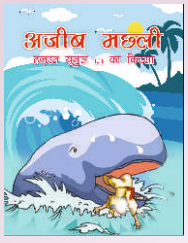

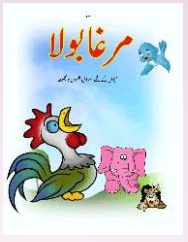

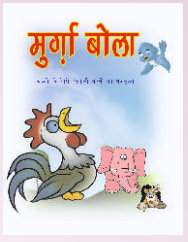

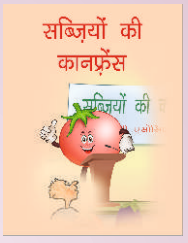

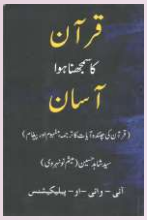

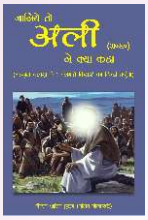

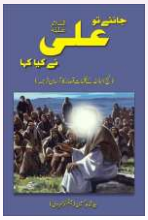

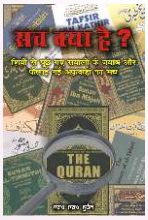

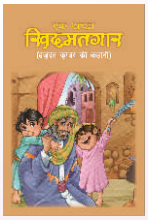

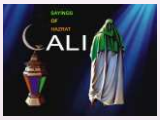

© समस्त अधिकार प्रकाशक के अधीन

Publisher:

I.Y.O. PUBLICATIONS

Flat No:5, City Centre, Medical College Road, Aligarh - 9259287320

117/P-1/556, Kakadeo, Kanpur - 9336100559

www.imamiayouth.in